मध्यकालीन भारत

इस्लाम का उदय और अरबों द्वारा सिन्ध-विजय

(1). इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब का जन्म अरब देश में जिस युग में हुआ था, वह पतनोन्मुखी काल था।

(2). हजरत मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई० में अरब के मक्का नगर में कुरेश कबीले के हाशिमी वंश में हुआ था।

(3). मुहम्मद साहब का मक्का से मदीना का प्रस्थान को हिजरत कहते हैं। इसी समय से 622 ई० हिजरी सम्वत् प्रारम्भ हुआ। मुस्लिम पंचांग का यह शुभारम्भ माना जाता है। 8 जून 632 ई० को 63 वर्ष की अवस्था में इनका शरीरान्त हो गया।

(4). मुहम्मद साहब की शिक्षाएँ पवित्र कुरान में संकलित है। उन्होंने प्रत्येक मुसलमान के लिए निम्न 5 कर्म सिद्धान्त निर्धारित किये –

(1). कलमा (2). नमाज (3). रोजा (4). जकात (5). हज

(5). मुहम्मद साहब के देहावसान के पश्चात् अरब में खलीफाओं का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। इस्लाम धर्मावलंबी दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गये। अबूबक्र के अनुयायी सुन्नी और अली के अनुयायी शिया कहलाये।

अरबों के प्रारम्भिक आक्रमण :–

Study for civil services

(1). मुहम्मद-बिन-कासिम

→ ये मकरान के मार्ग से भारत की ओर प्रस्थान किया।

→ सिन्ध पर इसका आक्रमण के दो प्रमुख कारण - (1). इस्लाम धर्म का प्रचार
(2). भारत के धन-संपदा के प्रति लालच

भारत पर तुर्क आक्रमण

→ महमुद गजनवी के 17 भारतीय आक्रमण [1000 से 1027 तक]

→ महमूद का पहला आक्रमण सन् 1000 में सीमान्त नगरों तथा किलो पर हुआ और उन पर उसने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

→ महमूद का सोलवाँ (16) प्रसिद्ध आक्रमण गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित सोमनाथ पर 1025 में हुआ

- महमूद का अन्तिम आक्रमण सिन्ध के जाटो पर 1027 में हुआ

Scanned by CamScanner

→ महमूद की मृत्यु - 30 अप्रैल 1030 को इस मूर्तिध्वंसक की मृत्यु हो गई।
→ महमूद एक न्यायप्रिय शासक तथा कट्टर सुन्नी मुसलमान था।
→ उसके दरबार में अनेक विद्वान् तथा साहित्यकार रहते थे जिनमें अलबरूनी फिरदौसी, उन्सूरी और फारुखी थे।
→ अलबरूनी ने अनेक संस्कृत के ग्रन्थों का अनुवाद किया तथा तहकीक-ए-हिन्द नामक ग्रन्थ की रचना की।
→ फिरदौसी ने विश्वविख्यात 'शाहनामा' नामक महाकाव्य लिखा।
→ विंसेन्ट स्मिथ के अनुसार, "महमूद लुटेरा था। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं"।
→ महमूद गजनवी के आक्रमणों के दो परिणाम बताइए -
① राजपूत राजाओं की सैनिक शक्ति को आघात लगा।
② भारत में इस्लाम धर्म का बीजारोपण हुआ।

मुहम्मद गोरी

Study for civil Services

→ शहाबुद्दीन भारतीय इतिहास में मुहम्मद गोरी के नाम से विख्यात हुआ।
→ मुहम्मद गोरी की भारत-विजय -

① तराइन का प्रथम युद्ध (1191) → पृथ्वीराज चौहान एवं गोरी के मध्य गोरी की सेना पराजित होकर मैदान से भाग खड़ी हुई। मुसलमानों की यह सबसे बड़ी पराजय और राजपूतों की अन्तिम विजय थी।

② तराइन का द्वितीय युद्ध [1192] → पृथ्वीराज चौहान एवं गोरी के मध्य पृथ्वीराज चौहान की सेना पराजित हुये। परिणामस्वरूप राजपूतों की पराजय हुई। पृथ्वीराज युद्ध-स्थल में ही पकड़ा गया।

③ कन्नौज पर आक्रमण (1194) → जयचन्द एवं मुहम्मद गोरी के मध्य जयचन्द पराजित हुये।

→ मुहम्मद गोरी को खोखर जाति के विद्रोह का दमन करने के लिये एक बार फिर पंजाब आना पड़ा। इस दौरान 1206 को नमाज पढ़ते समय किसी हिन्दू खोखर ने उसकी हत्या कर दी।

Scanned by CamScanner

→ मुहम्मद गोरी का भारतीय इतिहास में स्थान मुस्लिम साम्राज्य के संस्थापक के रूप में है।

→ राजपूतों की पराजय के कारण :-

1. शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता का अभाव
2. राजपूतों में कूटनीति का अभाव
3. उत्तरी-पश्चिमी प्राकृतिक सीमा की उपेक्षा
4. प्राचीन युद्ध-प्रणाली
5. सामाजिक व्यवस्था को दोष
6. धार्मिक दुर्बलता 7. सामन्तीय प्रथा इत्यादि।

दिल्ली सल्तनत का विस्तार

Study for civil Services

1. गुलाम-वंश [1206-1290]

1. कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210) :-

1. मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन को भारत में अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। मुहम्मद गोरी की मृत्यु के तीन महीने पश्चात् 24 जून 1206 को लाहौर कुतुबुद्दीन का राज्याभिषेक हुआ।

2. 1210 में लाहौर में चौगान खेलते समय अकस्मात् घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक को घातक चोट पहुँची और उसका निधन हो गया। लाहौर में ही उसे दफनाया गया और उसकी कब्र पर एक साधारण स्मारक बनवा दिया गया।

3. इतिहासकार मिनहाज ने अपनी पुस्तक तबकात-ए-नासिरी में उसकी मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है।

4. उसको 'लाखबख्श' की उपाधि प्रदान की गई थी क्योंकि वह बड़ा परोपकारी तथा दानी था।

5. कुतुबमीनार का निर्माण कराया।

Scanned by CamScanner

→ कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा बनाये गये महत्वपूर्ण स्थापत्य कला –

① कुव्वत-उल-इस्लाम दिल्ली में
② अढ़ाई दिन का झोपड़ा मास्जिद अजमेर में
③ कुतुबमीनार [शेख ख्वाजा ~~कुतुबु~~ कुतुबुद्दीन बाख्तियार काकी] की स्मृति में बनाया गया है।

→ इल्तुतमिश [1210-1236 ई०]

Study for civil services

→ इल्तुतमिश इल्बारी तुर्क था।
→ कुतुबुद्दीन ऐबक के दामाद थे।
→ इल्तुतमिश ने सर्वप्रथम 'कुत्बी' अर्थात् कुतुबद्दीन के समय के सरदार तथा मुइज्जी अर्थात् गोरी के समय के सरदारों के विद्रोह का दमन किया इल्तुतमिश ने इन विद्रोही सरदारों पर विश्वास न करते हुए अपने 40 गुलाम सरदारों का एक गुट या संगठन बनाया जिसे 'तुर्कान-ए-चेहालगानी' का नाम दिया गया। इस संगठन को चरगान भी कहा गया है। इल्तुतमिश के समय में ही अपध में पिर्थ विद्रोह हुआ।
→ इल्तुतमिश ने कूदकर आत्महत्या कर ली थी।
→ इल्तुतमिश प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने शासन व्यवस्था में सुधार करने का प्रयास किया। इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलवाये।
→ उसने सल्तनतकालीन दो महत्वपूर्ण सिक्के चांदी का टंका तथा तांबे का जीतल चलवाया।
→ इल्तुतमिश ने सिक्कों पर टकसाल के नाम अंकित करवाने की परम्परा आरम्भ किया।
→ इल्तुतमिश ने 'इक्ता व्यवस्था' का प्रचलन किया और अपनी राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानान्तरित किया।
→ पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।
→ इल्तुतमिश ने बदायूं की जामा मास्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। अजमेर की मास्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने ही करवाया था।

Scanned by CamScanner

→ डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार "इल्तुतमिश निस्सन्देह गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक था।

→ रजिया सुल्तान [1236-1240 ई०]

→ इल्तुमिस रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया तथा सिक्कों पर उसका नाम अंकित करवाया।
→ रजिया दिल्ली सुल्तनत की प्रथम तर्क महिला शासिका थी।
→ रजिया की असफलता के कारणों में कुछ इतिहासकारों का मत है कि "रजिया का स्त्री होन" ही उसकी असफलता का कारण था।

बलबन वंश [1265-1290 ई०]

Study for civil Services

① . गयासुद्दीन बलबन [1266-1286 ई०]

→ इल्बारी जाति के गयासुद्दीन बलबन ने एक नये राजवंश 'बलबन वंश' की स्थापना की। इल्तुतमिश ने ग्वालियर को जीतने के उपरान्त बलबन को खरीदा
→ बलबन तुर्कान-ए-चिहलगानी का सदस्य था।
→ रजिया के शासनकाल में 'अमीर-ए-शिकार के पद पर आसीन हुआ।
→ अपनी शक्ति को संगठित करने के बाद बलबन ने भव्य आधी जिल्ले-इलाही धारण किया।
→ उसने सैन्य विभाग दीवान-ए-अर्ज को पुनर्गठित करवाया। इमादुलमुल्क को दीवान-ए-अर्ज के पद पर प्रतिष्ठित किया तथा सीमान्त क्षेत्र में स्थित किलों का पुनर्निर्माण करवाया।
→ ~~बलबन ने दीवान-ए-अर्ज को पुनर्गठित करवाया~~
→ बलबन की अच्छी सेना व्यवस्था को श्रेय इमादुलमुल्क को ही था।
→ उसने तुर्क प्रभाव को कम करने के लिए फारसी परम्परा पर आधारित सिजदा (घुटने पर बैठकर सम्राट के सामने सिर झुकाना) एवं पाबोस (पांव को चूमना) के प्रचलन को अनिवार्य कर दिया।
→ उसने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नवरोज उत्सव को प्रारम्भ करवाया
→ अपने विरोधियों के प्रति बलबन ने कठोर 'लौह एवं रक्त' नीति का पालन किया। इस नीति के अन्तर्गत विद्रोही व्यक्ति की हत्या कर

Scanned by CamScanner

उसकी स्त्री एवं बच्चों को दास बना लिया जाता था।

→ बलबन दिल्ली सल्तनत का पहला ऐसा सुल्तान था जिसने अपने राजस्व सिद्धान्त की विस्तार पूर्वक व्याख्या की। उसके राजस्व सिद्धान्त के महत्त्वपूर्ण तत्व थे - राजवंशज अर्थात् राजा को राजवंश से सम्बन्धित होना चाहिए।

→ खिलजी वंश [1290 - 1320 ई०]

→ जलालुद्दीन फिरोज खिलजी 'खिलजी' वंश का संस्थापक था।
→ पहला सुल्तान था जिसकी आन्तरिक नीति दूसरो को प्रसन्न करने के सिद्धान्त पर आधारित थी। उसने हिन्दू जनता के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 - 1316 ई०)

Study for civil Services

→ अलाउद्दीन का बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था।
→ यद्यपि अलाउद्दीन ने खलीफा की सत्ता को मान्यता प्रदान करते हुए 'यामिन - उल - खिलाफत - नासिरी - अमीर-उल - मोमिनीन' की उपाधि ग्रहण की; किन्तु उसने खलीफा से अपने पद की स्वीकृति लेनी आवश्यक नहीं समझी।
→ अपनी प्रारम्भिक सफलताओं से प्रोत्साहित होकर अलाउद्दीन ने सिकन्दर द्वितीय की उपाधि ग्रहण कर इसका उल्लेख अपने सिक्कों पर करवाया।
→ उलेमा वर्ग को भी अपने शासन कार्य में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। उसने शासन में इस्लाम के सिद्धान्तों को प्रमुखता न देकर राज्यहित को सर्वोपरि माना।
→ मलिक काफूर को अलाउद्दीन खिलजी ने एक हजार दीनार में खरीदा गया था; इसलिए मलिक काफूर को हजार दीनारी भी कहा जाता था।
→ अलाउद्दीन की दक्षिण विजय का मुख्य श्रेय मलिक काफूर को ही जाता है।

अलाउद्दीन खिलजी प्रशासनिक सुधार

→ अलाउद्दीन खिलजी द्वारा प्रशासनिक सुधारों के अनेक कार्य किये।
→ उसने 'दाग' एवं 'चेहरा' प्रथा को स्थापित किया।
→ खिलजी की मंत्रीमंडल का प्रारूप निम्नलिखित है।

Scanned by CamScanner

अलाउद्दीन मंत्रीगण

1. दीवान-ए-वजारत - मुख्यमंत्री को वजीर कहा जाता था।
2. दीवान-ए-आरिज या अर्ज - सैन्य मंत्री
3. दीवान ए-इंशा - शाही उद्घोषणाओं
4. दीवान ए रसालत - विदेश विभाग

→ स्थायी सेना को गठित करने वाला अलाउद्दीन पहला सुल्तान था।

→ अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति के विषय में हमें व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की कृति तारीखे-फिरोजशाही से मिलती है।

→ उसने खाद्यान्नो की बिक्री हेतु शाहना-ए-मंडी नामक बाजार की स्थापना की थी।

→ सराय-ए-अदल - ऐसा बाजार होता था जहां पर वस्त्र, शक्कर, जड़ी बूटी, दीपक जलाने का तेल एवं अन्य निर्मित वस्तुएं बिकने के लिए आती थी।

→ दिल्ली में आकर व्यापार करने वाले प्रत्येक व्यापारी को दीवान-ए-रियासत में अपना नाम लिखवाना पड़ता था।

→ स्थापत्य कला के क्षेत्र में अलाउद्दीन खिलजी उसके वास्तुकला के नमूनों में सीरी का किला और हजार खम्भा महल विशेष उल्लेखनीय हैं।

→ अमीर खुसरो उसके दरबार का प्रसिद्ध कवि था।

→ अलाउद्दीन द्वारा बनाया गया अलाई दरवाजा प्रारम्भिक तुर्की कला का एक श्रेष्ठ नमूना माना जाता है।

तुगलक वंश [illegible]

[illegible] पहला सुल्तान था जिसने अपने नाम के साथ गाजी शब्द जोड़ा।

→ गयासुद्दीन तुगलक संगीत का घोर विरोधी था।

→ गयासुद्दीन एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था।

Scanned by CamScanner